International Journal of Education and Science Research Review
IJESRR
Volume-9, Issue-3 May-June- 2022
E-ISSN 2348-6457
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

‘‘प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षण को प्रभावित करने वाले कारकों के प्रति समायोजन का अध्ययन’’

सत्यवीर
पी–एच.डी. (शोधार्थी)

डॉ. रीटा झाझड़िया
शोध निर्देशिका

शोध आलेख सार –

जिस प्रकार अधिगम की प्रक्रिया जीवनपर्यन्त चलती है उसी प्रकार समायोजन की प्रक्रिया भी जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती है। समायोजन, तालमेल तथा अनुकूलन को एक अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। जन्म लेते ही बालक को अपने भौतिक वातावरण के साथ अनुकूलन करना पड़ता है। जीवन के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक भी है। कुछ समय के उपरान्त बालक को अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण के साथ जीवनपर्यन्त समायोजन करना पड़ता है। आज विश्व को ‘‘विश्व गाँव’’ की संज्ञा दी गई है। सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण के साथ बालक हो या प्रौढ़ समायोजन करना आसान नहीं है। विश्व में तीव्र परिवर्तनों की लहर के साथ सन्तुष्ट होने का प्रयास प्रत्येक व्यक्ति कर रहा है। भौतिक, सामाजिक वातावरण से अलग एक और वातावरण है जो प्रत्येक व्यक्ति के अर्न्तःमन से संबन्धित है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी इच्छाएँ, रूचियाँ व संज्ञानात्मक योग्यताएँ विभिन्न प्रकार से भिन्न–भिन्न स्तरों पर समायोजन को प्रभावित करती है। एक प्राथमिक स्तर के शिक्षक को अपने शिक्षण काल में अनेकों प्रकार की चुनौतियों का अपनी योग्यताओं और वातावरण के सन्दर्भ में सामना करना होता है। कभी समझौता करना होता है तो कभी उसके साथ समन्वय बैठाना होता है। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया व उपलब्धि को प्राथमिक स्तर के शिक्षक का उसके शिक्षण के प्रति समायोजन कहा जा सकता है।

मूल शब्द – शिक्षक, समायोजन, समाजीकरण

भूमिका –

शिक्षा को यदि समाजीकरण के उपकरण के रूप में देखा जाता है तो अध्यापक शिक्षा भी इससे अलग नहीं है। मानव सम्बन्ध को उत्तम बनाकर ही मानवीय सभ्यता और संस्कृति की रक्षा की जा सकती है। युद्ध प्रारम्भ मानव–मन से ही यदि होता है तो इसका कारण मानवीय मस्तिष्क का सामाजिक दायित्व से अछूता रहना भी हो सकता है। सामाजिक मूल्यों में संवर्द्धन के लिए अध्यापक ही जिम्मेदार होते हैं, तो समाज को भी उनकी मर्यादा की रक्षा करनी होती है। समाज के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के अभाव में सामाजिक प्रतिष्ठा सम्भव नहीं है। यह दृष्टिकोण विकसित करने में शिक्षा, अध्यापक और समाज के मध्य समन्वयन एवं सहयोगात्मक सन्तुलन की आवश्यकता है। यदि समाज की अपेक्षाएँ अध्यापक वर्ग से अधिक हैं तो उनके लिए समाज को सामाजिक प्रतिदान भी निर्धारित करना होगा। एक अध्यापक को समाज के सभी समुदायों के मध्य सामाजिक समरसता पैदा करने के लिए उसे समन्वन और सन्तुलन हेतु सामाजिक मूल्यों का विकास अपने विद्यार्थियों में अवश्य ही करना होगा जिससे उसके विद्यार्थियों के हृदय में समरसता के भाव उत्पन्न हो सके। ताकि सामुदायिक हिंसा और धार्मिक मतभेद में कमी हो सके।

समायोजन को सामंजस्य, व्यवस्थापन या अनुकूलन भी कहते हैं। समायोजन दो शब्दों को मिलाकर बना है–सम और आयोजन। सम का अर्थ है भली–भाँति, अच्छी तरह या समान रूप से और आयोजन का अर्थ है व्यवस्था अर्थात् अच्छी तरह व्यवस्था करना। अतएव समायोजन का अर्थ हुआ सुव्यवस्था या अच्छे ढ़ंग से परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की प्रक्रिया जिससे कि व्यक्ति की आवश्यकतायें पूरी हो जायें, मानसिक द्वन्द न उत्पन्न होने पायें। अनेक आवश्यकताएं ही व्यक्ति को लक्ष्य की प्राप्ति की ओर प्रेरित करती हैं। जब व्यक्ति को अपने लक्ष्य की प्राप्ति सरलता से हो जाती है, तो उसे संतोष का अनुभव होता है नहीं तो, उसे निराशा एवं असंतोष की अनुभूति होती है। ऐसे में जो व्यक्ति यदि सृजनात्मक और परिस्थितियों के अनुकूल रहकर समायोजन स्थापित कर लेता है, वही व्यक्ति यदि बाधाओं को दूर करने में असमर्थ रहता है तो उसमें कुसमायोजन उत्पन्न हो जाता है। साधारणतयाः समायोजन की यह प्रक्रिया व्यक्ति के जीवन में निरन्तर चलती रहती है।

समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने व्यवहार में परिवर्तन का अपने वातावरण से सामजंस्य स्थापित करता है। व्यक्ति की सहज क्रियाओं के अतिरिक्त व्यक्ति के सभी व्यवहार प्रेरकों पर आधारित हैं। प्रेरकों के मूल में आवश्यकताएँ होती है। इन्हीं आवश्यकताओं से प्रेरित होकर मनुष्य लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर होता है। जब तक लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती उसमें एक प्रकार का तनाव रहता है। व्यक्ति के इस तनाव का निवारण समायोजन द्वारा होता है। मनोवैज्ञानिकों ने समायोजन को एक ऐसे व्यवहार के रूप में परिभाषित किया है जो व्यक्ति के तनाव को कम करने के लिए होता है। यह वह पथ है जिस पर चलते हुए हम ऐसे वातावरण में जो कभी लाभदायक एवं सहायक है तो कभी जटिल और हानिकारक है, में अपनी आवश्यकताओं की पुष्टि करते हैं। हमारे समायोजित होने की प्रक्रिया केवल तभी घटित होती है जब हमारी कुछ आवश्यकताएँ हों, हम उन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अनेक मार्ग चुने और जब पर्यावरण, जिसमें कि हमें संतुष्टियां ढूंढनी हैं, हमारे प्रति तटस्थ या विरोधी बना रहे।

अध्ययन का महत्व

शिक्षकों में अपने व्यवसाय के प्रति अन्तरात्मा के अनुकूल व्यवहार होगा, उनमें समायोजन का गुण होगा तथा अपने व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्ध होंगे। बढ़ते शैक्षिक कार्यक्रम, बढ़ते पाठ्यक्रम, ज्ञान का विस्फोट, वैश्वीकरण का प्रभाव, आधुनिकीकरण विकास की दौड़, समाज की बढ़ती महत्वांकाक्षाएं, विज्ञान व तकनीकी के बढ़ते प्रयोगों के चलते शिक्षकों के कार्य, वातावरण व कार्यशैली और अधिक जटिल हो गयी है। प्रत्येक शिक्षक से विषय विशिष्टीकरण की अपेक्षा के साथ-साथ भाषाई व सूचना क्रान्ति के ज्ञान की अपेक्षा की जा रही है तथा बढ़ती उपभोक्तावादी संस्कृति के तहत शिक्षक की सेवाओं को भी समाज की कसौटी पर परखा जाने लगा है तथा उसे अपनी सेवाओं के प्रति जबावदेह ठहराया जा रहा है। आने वाले समय में शिक्षण सेवाओं को भी अन्य सेवाओं की भांति उपभोक्ता संरक्षण कानून के प्रति उत्तरदायी ठहराया जाएगा। उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि एक अध्यापक को अपने व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्ध होना आवश्यक हो जायेगा। प्रस्तुत शोध का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि इस शोध के निष्कर्ष एवं दिये गये सुझावों से शिक्षा जगत को एक नई पहचान मिलेगी।

अध्ययन का औचित्य

शिक्षक का कार्य शिक्षण करवाना होता है वह पूर्ण तन्मयता से शिक्षण तभी करवा सकता है जब उसमें अपने व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति हो। विभिन्न वर्गो के शिक्षकों की अभिवृत्ति को अध्ययन करने के पीछे शोधकर्ता का उद्देश्य वर्ग विशेष के अध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति को जांचना है। साथ ही शिक्षकों के लिए अभिवृत्ति के स्थान को निर्धारित करना है ताकि समाज को समुन्नत दिशा प्रदान की जा सके।

आज यह आम धारणा हो गई है कि अध्यापन भी एक विशिष्ट वृत्ति है जिसकी अपनी विशेषताएँ हैं। साथ ही आज शिक्षक को समाज के प्रति जवाबदेह भी माना जा रहा है। ऐसे में शिक्षक की सुव्यवस्थित वृत्ति का विकास एवं समाज की मांगों के अनुकूल शिक्षक वृत्ति का व्यवसायिक विकसित होना इसकी प्रतिबद्धताओं की विवेचना करना एक आवश्यकता आधारित व उद्देश्यपरक कार्यक्रम है।

समस्या कथन

‘‘प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षण को प्रभावित करने वाले कारकों के प्रति समायोजन का अध्ययन’’

अध्ययन के उद्देश्यः

1. प्राथमिक स्तर के राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में शिक्षण के प्रति समायोजन को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।
2. प्राथमिक स्तर के गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में शिक्षण के प्रति समायोजन को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँः–

1. प्राथमिक स्तर के राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में शिक्षण के प्रति समायोजन को प्रभावित करने वाले कारकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. प्राथमिक स्तर के गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में शिक्षण के प्रति समायोजन को प्रभावित करने वाले कारकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

अध्ययन का परिसीमनः–

1. यह अध्ययन सीकर जिले के हिन्दी माध्यम वाले प्राथमिक स्तर के राजकीय एवं मान्यता प्राप्त गैर–राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों तक सीमित रखा गया है।
2. इस अध्ययन में 25-30 राजकीय एवं गैर–राजकीय विद्यालयों को शामिल किया गया है।
3. इस अध्ययन में राजकीय विद्यालयों से 200 शिक्षक (100 पुरूष + 100 महिला) तथा गैर–राजकीय विद्यालयों से 200 शिक्षक (100 पुरूष + 100 महिला) को लिया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधान की विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है। यह अनुसन्धान की एक वैज्ञानिक विधि है इसके द्वारा एकत्रित दत्त प्रामाणिक एवं विश्वसनीय माने जाते हैं ।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

समायोजन मापनी– डॉ. ए.के.पी. सिन्हा एवं डॉ. आर.पी. सिंह

समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण :–

<u>सारणी संख्या–1</u>

प्राथमिक स्तर के राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में शिक्षण के प्रति समायोजन को प्रभावित करने वाले कारकों के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना

प्राप्तांक प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
उच्च	औसत	निम्न	उच्च	औसत	निम्न
4	80	16	0.08 से 7.91 तक	72.00 से 88.00 तक	8.66 से 23.33 तक

उक्त सारणी में प्राथमिक स्तर के राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में शिक्षण के प्रति समायोजन को प्रभावित करने वाले कारकों के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना की है जिसके अनुसार 0.08 से 7.91 प्रतिशत शिक्षण के प्रति समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक

औसत से उच्च स्तर पर पाये गये। 72.00 से 88.00 प्रतिशत शिक्षण के प्रति समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक औसत तथा 8.66 से 23.33 प्रतिशत शिक्षण के प्रति समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक औसत से निम्न पाये गये। अतः इस संदर्भ में उक्त परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सारणी संख्या – 2

प्राथमिक स्तर के गैर–राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में शिक्षण के प्रति समायोजन को प्रभावित करने वाले कारकों के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना

प्राप्तांक प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
उच्च	औसत	निम्न	उच्च	औसत	निम्न
33	45	22	28.29 से 37.70 तक	40.02 से 49.97 तक	17.85 से 26.14 तक

उक्त सारणी में प्राथमिक स्तर के गैर–राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में शिक्षण के प्रति समायोजन को प्रभावित करने वाले कारकों के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना की है जिसके अनुसार 28.29 से 37.70 प्रतिशत शिक्षण के प्रति समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक औसत से उच्च स्तर पर पाये गये। 40.02 से 49.97 प्रतिशत शिक्षण के प्रति समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक औसत तथा 17.85 से 26.14 प्रतिशत शिक्षण के प्रति समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक औसत से निम्न पाये गये। अतः इस संदर्भ में उक्त परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सारांश –

समायोजन व्यक्ति और उसके वातावरण के मध्य चलने वाली प्रक्रिया से सम्बन्धित है। यह व्यक्ति की आवश्यकताओं से जुड़ा हुआ है। आवश्यकताओं की यह पूर्ति, व्यक्ति जिस समाज में रहता है। उसमें प्रचलित रीति–रिवाजों, नैतिक मान्यताओं एवं मानदण्डों के अनुरूप होनी चाहिए। तभी वह प्रक्रिया सफल हो सकती है।

International Journal of Education and Science Research Review
Volume-9, Issue-3 May-June- 2022 E-ISSN 2348-6457 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

संदर्भ–ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल, आई.पी. (1996)''बाल विकास एवं शैक्षिक क्रियाएं'', आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 141-146.
- अरोड़ा, रीता एवं मारवाह, सुदेश (2001) ''शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी'' 23, भगवान दास मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर, पृष्ठ संख्या – 43
- अस्थाना, विपिन (1994)''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन और मूल्यांकन'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2 (उ.प्र.), पृष्ठ संख्या – 53
- भार्गव, महेश (1993)''आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन'' द्वितीय संस्करण, भार्गव बुक हाऊस, राजामण्डी, आगरा–2, पृष्ठ संख्या – 24
- जैन. प्रतिभा एवं संगीता शर्मा (१९९८). भारतीय स्त्री, जयपुरः रावत पब्लिकेशन्स्।
- अग्रवाल. रश्मि (१९९९). स्ट्रीट चिल्ड्रन, दिल्लीः क्षिप्रा पब्लिकेशन्स्।
- अरोड़ा, रीता एवं मारवाह, सुदेश (२००६). शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी, जयपुरः शिक्षा प्रकाशन।
- चौबे, सरयू प्रसाद (२००६). शिक्षा मनोविज्ञान, जयपुरः अनुप्रकाशन।
- त्रिपाठी, मधुसूदन (२००६). बालिका शिक्षा, नई दिल्लीः विद्यावती प्रकाशन।
- गैरेट (२००७). स्टैटिस्टिक्स इन साइकोलॉजी एण्ड एजूकेशन, मुम्बईः वकील्स फीफर एण्ड साइमन्स।
- शर्मा, एन.आर. और कड़वासरा, ओम (२००७). शिक्षा मनोविज्ञान, जयपुरः साहित्य चन्द्रिका प्रकाशन।
- मिश्रा, महेन्द्र कुमार एवं नमिता, शर्मा (२००८). शिक्षण एवं अधिगम के मनोसामाजिक आधार, जयपुरः इण्डियन पब्लिशिंग हाउस।